RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.021

# सामाजिक क्षेत्रों में महिला सहभागिता में शिक्षा का योगदान–एक अध्ययन

पूनम कुमारी

शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 17 August 2020

**Keywords**
महिला शिक्षा, आर्थिक योगदान, परिवार–आकार, सहभागिता, नारीवाद।

***Corresponding Author**
*Email: pvnehra06[at]gmail.com*

**ABSTRACT**

स्त्रियां परिवार की मेरूदण्ड है। इनकी प्रगति पर हमारा सर्वांगीण विकास निर्भर करता है। शिक्षित स्त्रियां न केवल परिवार की उन्नति करती है बल्कि समाज को भी सुसंस्कृत व प्रगतिशील बनाने में सहायता करती है। स्त्री शिक्षा की प्रगति इस समाज व राष्ट्र के लिए आवश्यक है। आज की स्त्रियां देश का भाग्य बदलने में सक्षम हो रही हैं। आज नारी नवचेतना की भावना से ओतप्रोत है तथा वह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना यथासम्भव योगदान दे रही है।

नारी शिक्षा महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अशिक्षा का निर्वहन करती है। देखा गया है कि शिक्षित एवं आर्थिक आत्मनिर्भर महिलायें परिवार के आकार एवं आर्थिक स्तर निर्माण में विनिश्चय कारक का कार्य करती है। शिक्षा द्वारा महिलाये एक तरफ तो एक बेहतर गृहणी बनती है तथा दूसरी तरफ एक उत्तम आर्थिक एजेन्ट का रुप धारण करती हैं। दुर्भाग्यवश, भारतवर्ष के ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी परिवेश तथा निम्न सामाजिक स्तरों पर महिला शिक्षा, फलतः आर्थिक सशक्तिकरण, अत्यन्त निम्न स्तरीय पाया जाता हैं। वर्तमान शोध पत्र एक अर्द्धशहरी–परिवेश में महिला शिक्षा, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी तथा परिवार के आकार में महिलाओं की भूमिका का सरल विश्लेषण करता है। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त सूचना के आकार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि अध्ययनरत अर्द्ध शहरी–परिवेश में नारी शिक्षा की दशा सोचनीय है। शिक्षा का अभाव महिलाओं की आर्थिक शक्तियों को सीमित करता है, तथा शिक्षा तथा परिवार–आकार में सीधा सम्बन्ध है।

## प्रस्तावना

यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। हाल के वर्षो में तीव्र आर्थिक विकास के पश्चात भी महिलाओं के समक्ष चुनौतियों का विशाल पर्वत है।

अशिक्षा नये विचारों व मान्यताओं को समाज में प्रतिस्थापित होने से रोकती है, जिससे रूढ़ियां अपनी जड़ों को और गहराई से जमाने में समर्थ हो जाती है। अतः ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा ही ऐसा अस्त्र है जो परम्परावादी सोच को परिवर्तित करके स्वस्थ सामाजिक विकास के लिए संजीवनी का कार्य कर सकता है। देश की नारी शिक्षा संसार के अन्य देशों की अपेक्षा अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। विकासशील देशों में स्त्रियों को पुरूषों के साथ पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक उत्तरदायित्वों का पालन करना पड़ता है। अतः उनकी शिक्षा की अवहेलना करना समाज की भावी पीढ़ी के साथ अन्याय करना है। स्त्री समाज का आधार है उन्हें शिक्षित करना पूरे समाज को शिक्षित करना है।

स्त्री शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है। बालक की प्रारम्भिक पाठशाला घर है और माता ही उसकी प्रथम शिक्षिका है। शिक्षित स्त्रियाँ न केवल परिवार की उन्नति करती हैं बल्कि समाज को भी सुसंस्कृत और उन्नतिशील बनाने में सहायता प्रदान करती हैं। महिलाओं का निम्न स्तरउन्हें विकास की कम सुविधायें उपलब्ध कराता है। तथा समाज को विकलांग बना देता है। परन्तु इसके पंचायत भी आज की भारतीय नारी अपनी एक पृथक पहचान बनाने में सफल हो पायी है। वह शिक्षा के क्षेत्र में जागरुक हो रही है। इस कार्य के लिए उसने वर्षो परिश्रम किया है तथा आज वह इस पड़ाव पर है कि प्रत्येक क्षेत्र में उसे पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

यह सब स्थिति स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयासों का ही प्रतिफल है। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री शिक्षा की प्रगति इस समाज व राष्ट्र के लिए आवश्यक है। आज महिलाओं की प्रगति के लिए हमारी सरकार पर्याप्त ध्यान दे रही है। तथा प्रयास भी कर रही है। आज की स्त्रियां देश का भाग्य लिखने में सक्षम होने का भरपूर प्रयास कर रही है। आज नारी नव चेतना जागृति की भावना से ओत–प्रोत है।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. विभिन्न क्षेत्रों में महिला सहभागिता में शिक्षा के योगदान का अध्ययन करना।
2. सामाजिक क्षेत्र में महिला सहभागिता में विषय वर्ग

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के अनुसार शिक्षा के योगदान का अध्ययन करना।

3. आर्थिक क्षेत्र में महिला सहभागिता में विषय वर्ग के अनुसार शिक्षा के योगदान का अध्ययन करना।

## सम्बन्धित साहित्य का औचित्य

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण सोपान है जिसके अभाव में उचित दिशा में व उच्च स्तर का अनुसन्धान कार्य एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है। सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से अनुसन्धान की अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होती है। शोधकत्री को अनुसंधान के विषय क्षेत्र के वर्तमान ज्ञान की सीमा रेखा की जानकारी हो जाती है। पूर्व अनुसन्धानकर्ताओं द्वारा सुझायी गयी समस्याओं की जानकारी के साथ ही समस्या विशेष की परिसीमाओं को समझकर उसे सही दिशा मिलती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सन्दर्भित ग्रन्थों, अनुसन्धान प्रपत्रों, देशी तथा विदेशी शैक्षिक जर्नलों इत्यादि का प्रयोग सम्बन्धित साहित्य खोजने में किया गया हैं।

## महिला शिक्षा व सामाजिक स्थिति

उच्च व श्रेष्ठ सामाजिक स्थिति किसी भी महिला को शिक्षा व स्वयं के चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर होने में सहायता करती है। सामाजिक स्थिति व महिलाओं की शिक्षा में घनिष्ट सम्बन्ध होता है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति उनकी शिक्षा व उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए अनेंक शोधार्थियों ने इस विषय पर अनेकानेक अध्ययन किये जो निम्नलिखित है–

- तनवर (1987), तथा अचूथन (1989), नें महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की महाविद्यालयी छात्राओं में वृत्तिक अभिविन्यास निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत अधिकांश महिलायें उच्च मध्यम वर्गी व शहरी पृष्ठभूमि तथा अंग्रेजी माध्यम व केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षित थी।
- राजन (1993), ने भारत में महिला और आधुनिक व्यवसाय सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश कार्यरत महिलाओं के पिता परास्नातक, व्यावसायिक तकनीकि शिक्षा, चिकित्सा और अभियन्ता तथा उच्च प्रशासनिक सेवा में संलग्न थे। अध्ययन के अनुसार अभिभावकों की शिक्षा तथा महिलाओं के कार्यरत होने के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।
- डेविड (1998), ने उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की कामकाजी एवं अकामकाजी माताओं की किशोर बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि कार्यरत माताओं की किशोर बालिकाओं की उपलब्धि, अभिप्रेरणा, अकार्यरत माताओं की किशोर बालिकाओं की अपेक्षा निश्चित रूप से श्रेष्ठ है।

## महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु कार्यक्रम

महिलाओं में सामाजिक चेतना और जागरुकता उत्पन्न करने एवं उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने और उनकी आय बढ़ाने हेतु सरकार द्वारा महिलाओं के लिए कई विकास और कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है–

- ✓ समेकित बाल विकास सेवा योजना (आई.सी.डी.एस.)
- ✓ ड्वाकरा योजना (DWACRA)
- ✓ महिला विकास निगम स्थापित करने की योजना
- ✓ महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण
- ✓ राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना
- ✓ महिला उत्थान योजना
- ✓ स्वास्थ्य सखी योजना

## निष्कर्ष

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो, राजनैतिक हो, या पारिवारिक हो, महिलाओं की सहभागिता सदैव ही रही है किन्तु शिक्षा ने इसके प्रतिशत में वृद्धि की है। अध्ययन में पाया गया है कि महिलायें यह मानती है कि शिक्षा उनके लिए अति आवश्यक है तथा शिक्षित होना उनकी सहभागिता में वृद्धि करता है। शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

सर्वेक्षण व व्यष्टि अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ है कि जैसे– जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा किये जा रहे कार्यो व योगदान में वृद्धि हो रही है। शिक्षित होने के बाद वह सामाजिक रूप से अधिक जागरूक व क्रियाशील हो गयी हैं। स्वयं के स्वार्थ से बढ़कर समाज व अपने आस–पास के व्यक्तियों की सहायता में अपना योगदान दे रही हैं। अध्ययन में पाया गया है कि आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता को अत्यधिक स्वीकार किया गया है। सर्वेक्षण व व्यष्टि अध्ययन द्वारा पाया गया कि सभी महिलायें यह स्वीकार करती है कि शिक्षा ने आर्थिक क्षेत्र में उनकी सहभागिता को बढ़ा दिया है। वर्तमान में उनका कार्य–क्षेत्र घर तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि वह घर के बाहर ऑफिस व आर्थिक रूप से सम्बन्धित भूमिका को भी निपुणता से निभा रही है।

## सुझाव

- समाज में स्त्रियों के अस्तित्व को समझकर उनके व्यक्तित्व के विकास में पूर्ण सहयोग देना चाहिए तथा उनके प्रति अपनी संकुचित दृष्टि में व्यापक परिवर्तन लाना चाहिए।
- बेटियों को शिक्षित करके आत्मनिर्भर बनाया जाये।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

- समाज अपनी पुत्री, बहू आदि द्वारा निभाये गये घर के उत्तरदायित्वों के साथ–साथ उनकी शिक्षा पर भी समुचित ध्यान दें।
- महिलाओं द्वारा किये जाने वाले समाज सेवी कार्यो को बढ़ावा देना चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. सिंह, अरुण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
2. सिंह, रजनी रंजन (2007), सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण की वास्तविकतायें, परिप्रेक्ष्य ।
3. सिंह, डॉ0 मधुरिमा (2012), शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की जनसंख्या विस्फोट के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाचिन्तन, वर्ष 11, अंक 42, त्रिमूर्ति संस्थान, अप्रैल. जून।
4. हेनरी, ई. गैरेट (2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिशर्स।


## वेब सन्दर्भ सामग्री


1. www.jagran.com/news/national-kanya-vidya-Dhan-2013-2014 government-reduce-the-fund-amount40872826.html
2. www.surireporters.com/index.kanyadhanyojna,thuesday,16/06/201
3. sadhana,vivrekarsunil, www.webdunia.com. international women's day.


RRIJM 2015, All Rights Reserved 